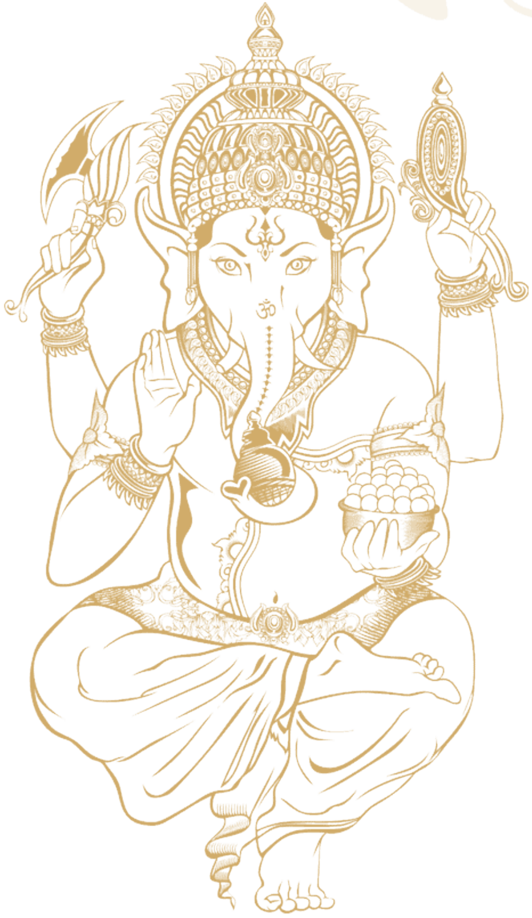

Pradeep Kumar Delhi

12 Nov 1985

12:45 PM

Jahanabad

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120591101

तिथि 12/11/1985 **समय** 12:45:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Jahanabad **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:39:22
अक्षांश 25:13:00 उत्तर **रेखांश** 84:59:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:09:56 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	16:20:24 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:15:53 घं	योनि	व्याघ्र
सूर्योदय	06:04:59 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	17:03:22 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2042	वश्य	मानव
शक संवत	1907	वर्ग	सर्प
मास	कार्तिक	युँजा	मध्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	वायु
तिथि	15	जन्म नामाक्षर	ती-तीप्ति
नक्षत्र	विशाखा	पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
योग	सौभाग्य	होरा	गुरु
करण	नाग	चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी
गुरु 13वर्ष 7मा 11दि
बुध
24/06/2018
25/06/2035

बुध	20/11/2020
केतु	17/11/2021
शुक्र	17/09/2024
सूर्य	25/07/2025
चन्द्र	24/12/2026
मंगल	21/12/2027
राहु	10/07/2030
गुरु	15/10/2032
शनि	25/06/2035

योगिनी
धान्या 2वर्ष 6मा 19दि
भ्रामरी
01/06/2024
01/06/2028

भ्रामरी	11/11/2024
भद्रिका	02/06/2025
उल्का	31/01/2026
सिद्धा	11/11/2026
संकटा	02/10/2027
मंगला	11/11/2027
पिंगला	01/02/2028
धान्या	01/06/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			03:11:58	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			26:11:32	तुला	विशाखा	2	गुरु	केतु	नीच राशि	1.44	आत्मा	पितृ	जन्म
चंद्र			21:59:17	तुला	विशाखा	1	गुरु	शनि	सम राशि	1.11	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			16:09:09	कन्या	हस्त	2	चंद्र	शनि	शत्रु राशि	1.18	मातृ	भ्रातृ	वध
बुध			18:42:44	वृश्चिक	ज्येष्ठा	1	बुध	केतु	सम राशि	1.31	भ्रातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु			15:59:24	मक	श्रवण	2	चंद्र	शनि	नीच राशि	1.00	पुत्र	धन	वध
शुक्र			09:41:20	तुला	स्वाति	1	राहु	गुरु	मूलत्रिकोण	0.96	ज्ञाति	कलत्र	अतिमित्र
शनि		अ	05:46:36	वृश्चिक	अनुराधा	1	शनि	बुध	शत्रु राशि	1.31	कलत्र	आयु	सम्पत
राहु	व		15:33:49	मेष	भरणी	1	शुक्र	सूर्य	शत्रु राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		15:33:49	तुला	स्वाति	3	राहु	शुक्र	सम राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

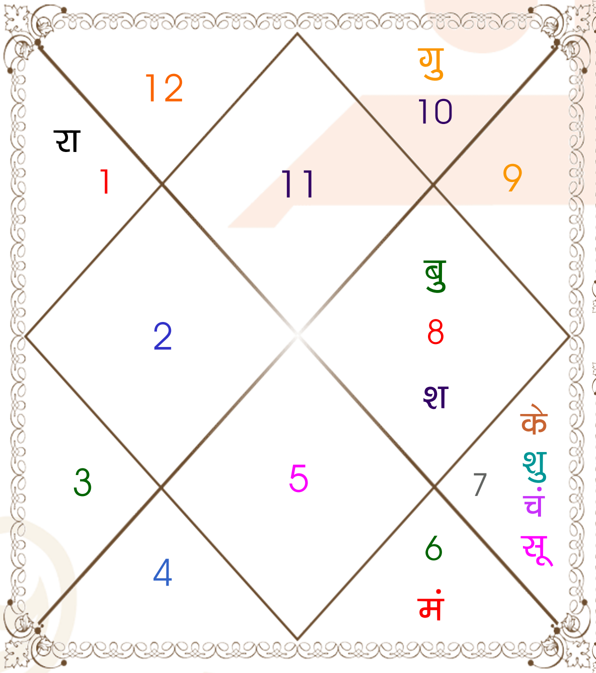

चन्द्र कुंडली

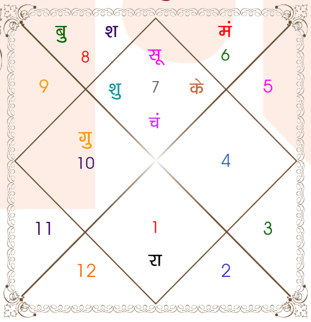

नवमांश कुंडली

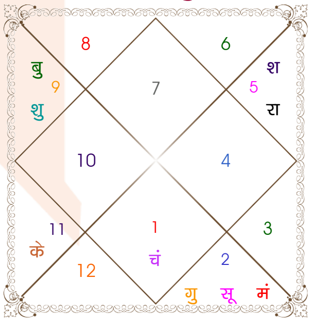

सर्वाष्टकवर्ग

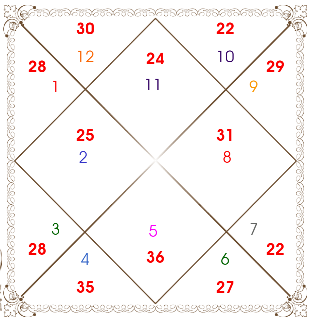

दशमांश कुंडली

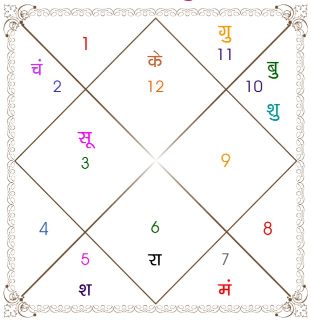

Prem Pagare
Swatik Future Point
Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh
Mo.No. 9826471293
Email:- prempagare19@gmail.com

नक्षत्रफल

आप विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि व्याघ्र, वर्ग सर्प, वर्ण शूद्र, गण राक्षस तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर ”ति” या ”ती” से प्रारम्भ होगा।

आप अपने पति को वश में रखने में सफलता प्राप्त करेंगी। अपने समस्त सांसारिक कार्यों को आपके निर्देश तथा सलाह के अनुसार ही सम्पन्न करेंगे। बिना आपकी सलाह या आज्ञा लिए वे कोई भी कार्य नहीं कर सकेंगे। इस प्रकार आपका उनके ऊपर पूर्ण प्रभाव रहेगा। आपकी प्रवृति अभिमानी होगी तथा अनावश्यक रूप से कभी कभी समाज में इसका प्रदर्शन करती रहेंगी फलतः अन्य लोग आपसे विशेष प्रभावित नही रहेंगे। अपने दुश्मनों को पूर्ण रूप से पराजित करने में आप समर्थ होगी तथा कोई शत्रु आपका सामना नहीं कर पायेगा। आप में क्रोध की मात्रा भी अधिक रहेगी अतः छोटी छोटी बातों में क्रोध का प्रदर्शन करेंगी फलतः कई बार आपको इससे अतिरिक्त परेशानी उठानी पड़ेगी।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक क्रोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

आपके मन में दूसरे लोगों के प्रति अकारण ईर्ष्या तथा द्वेष की भावना भी कभी कभी परिलक्षित होगी। यदि कोई व्यक्ति आपसे कोई अच्छा कार्य करेगा या सफलता प्राप्त करेगा तो आप यह सहन नहीं कर करेंगी तथा उससे ईर्ष्या करेंगी। आपकी इस प्रवृति से अन्य लोग आपको अच्छा नहीं समझेंगे। आपका शरीर कोमल कान्ति से सुशोभित रहेगा। आप अपनी वाक्पटुता के कारण समाज में ख्याति प्राप्त करेंगी तथा चतुराई से अन्य लोगों को प्रभावित करने में सफल रहेगी।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

धामिकता की भावना से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए नित्य हवनादि धामिक कृत्यों को सम्पन्न करती रहेंगी। साथ ही आपके वास्तविक मित्र भी अल सख्या में रहेंगे।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।

Prem Pagare
Swatik Future Point
Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh
Mo.No. 9826471293
Email:- prempagare19@gmail.com

यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यों में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

आप हृदय से कठोर होंगी तथा दया एवं करूणा के भाव की इसमे न्यूनता रहेगी। अन्य लोगों से आपका विवाद तथा कलह चलता रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य सामीजक जनों व्यक्तियों से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोडतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में सपरिवार धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने के लिए भी आप नित्य तत्पर एवं उत्सुक रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित रहेंगे तथा तीर्थयात्रा करने के लिए भी सदैव यत्नशील एवं उद्यत रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं ऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। साहित्य या काव्यशास्त्रादि के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार आप इनका अध्ययन भी करेंगी। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य प्रथम प्रयत्न में ही सफल हो जाया करेंगे। बन्धुवर्ग से आपका विशेष स्नेह का भाव रहेगा एवं उनसे नित्य सहयोग एवं सहायता प्राप्त करती रहेंगी। आप एक सौभाग्यशाली महिला भी होंगी एवं धार्मिक तथा देव पितृ संबंधी कार्यों में नित्य निष्ठावान होंगी। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी एवं गुणवान पुत्रों से प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

तुला राशि में पैदा होने के कारण आप शरीर तथा मुख से सन्दर रहेंगी। आपकी आखें बड़ी होंगी तथा नासिका भी उन्नत रहेगी। नाना प्रकार के वाहनादि साधनो से आप हमेशा सुशोभित रहेगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। वाहन तथा भूमि से आप बलवती होंगी तथा इनसे पूर्ण लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा समाज में आपको पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। धन वैभव एवं ऐश्वर्य का आपके पास अभाव नहीं रहेगा इससे आप हमेशा सुशोभित रहेंगी। अपने पति को आप पूर्ण रूप से अपने वश में रखेंगी। विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में आप अत्यन्त ही चतुर रहेंगी। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा भक्ति का भाव रहेगा तथा नियमानुसार आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। धन धान्य को संग्रह करने की प्रवृति भी आप में परिलक्षित

होगी। इसके अतिरिक्त बन्धु वर्ग की भलाई के कार्यों को करने में भी आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप देवता ब्राहमण तथा भद्रजनों की सेवा में निरन्तर तत्पर रहेंगी। आप एक समाज में ख्याति प्राप्त विदुषी होंगी तथा शुद्धता से युक्त रहकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी। आपका शरीर सुवासित रहेगा परन्तु शरीर के अधिकांश अंग कमजोर रहेगे। भ्रमण तथा यात्रा के प्रति आपकी गहन रूचि रहेगी। आपका अधिकांश समय यात्राओं तथा घूमने फिरने में ही व्यतीत होगा। खरीदने तथा बेचने की कला में आप हमेशा निपुण रहेंगी। अपने समीपस्थ संबंधियो तथा बन्धुओं की आप यत्न पूर्वक भलाई करेंगी परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा उपक्षो भी सहन करनी पड़ेगी। साथ धन का आपके पास सामान्यतया अभाव नही होगा तथा इससे परिपूर्ण रहेंगी।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः कयविकयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप प्रवृति से चंचल तथा शरीर से दुर्बल रहेंगी। आप अपने जीवन के समस्त कार्यकलापों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी तथा कार्यों में शीघ्रता या चंचलता आपको प्रिय नहीं होगी। न्याय के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा आप स्वयं भी न्यायप्रिय होंगी। आपकी न्यायप्रियता तथा निष्पक्षता को देखकर अन्य लोग आपको अपने विवादों के समाधान करने के लिए मध्यस्थ या पंच मनोनीत करेंगे जिसे आप ईमानदारी से पूर्ण करेंगी। इसके साथ ही अपपकी संतति भी अल्प संख्यां में होगी तथा भाग्योदय भी काफी विलम्ब से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः कयविकयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा तथा सरकारी अधिकारियों तथा पदाधिकारियों को प्रसन्न करने की कला में आप चतुर होंगी। इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। कभी कभी आप अत्याधिक मात्रा में बोलना प्रारम्भ करेंगी तो बोलती ही रहेंगी इससे अन्य जनों को आपसे काफी असुविधा होगी फलतः आपका प्रभाव कम होगा। आप ज्योतिष शास्त्र अथवा ग्रहनक्षत्रादि के ज्ञान देने वाले शास्त्रों में भी प्रवीण रहेंगी साथ ही बन्धु तथा सेवक वर्ग के प्रति आपके मन में हमेशा स्नेह की भावना रहेगी।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

आप कभी कभी सुअवसर पर अपने क्रोध को प्रदर्शित करेंगे फलतः बाद में इसके लिए आपको दुःख की प्राप्ति होगी। आपकी वाणी मधुर तथा सर्वप्रिय होगी जिससे सुनकर अन्य लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपके मन में दया की भावना भी विद्यमान रहेगी अतः अवसर अनुकूल दीन दुःखियों के प्रति अपनी इस भावना को आप प्रदर्शित करती रहेंगी। आपके पास धनागमन में विषमता रहेगी कभी अत्याधिक मात्रा में तथा कभी अत्यल्प मात्रा में इसकी आपको प्राप्ति होगी। आप के नेत्रों में भी चंचलता रहेगी। आप घर में बलवान तथा घर से बाहर अपने को दुर्बल अनुभव करेंगी। आप मित्रो के मध्य अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा घर से बाहर विदेश में भी प्रवास करेंगी।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप नाना प्रकार के वाहन साधनों से सर्वथा सुशोभित रहेंगी तथा सहर्ष उनका उपभोग करेंगी। आपका स्वभाव दान शील होगा तथा यथा शक्ति आप इस प्रवृति का जीवन में पालन करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप समस्त वैभवो से भी युक्त रहेंगी।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में उत्पन्न होने के काण आपकी प्रकृति कभी कभी अधिक तथा व्यर्थ बोलने की रहेगी। आप हृदय से भी कठोर होगी तथा दया एवं करूणा का भाव का अधमात्रा में प्रदर्शित करेंगी। आप छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित होने वाली होंगी। जिससे अन्य लोग आपसे विशेष प्रभावित नहीं रहेंगे। साहस का आपमें कभी भी अभाव नहीं रहेगा तथा अपने समस्त कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करेंगी। साहसिक कार्यों को करने के लिए भी हमेशा उद्य त रहेंगी। परन्तु आप अपने कार्य के लिए निम्न से निम्न कार्य को करने के लिए तत्पर हो जाएंगी। आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा शरीर में पूर्ण शक्ति रहेगी। अन्य लोगों से विवाद करने की प्रवृति भी आप में रहेगी फलतः अधिकांश लोगों से आपका विरोध भाव रहेगा। अतः अन्य जनों से विनम्रतापूर्वक व्यवहार करना चहिए।

आप जीवन में उन्माद तथा प्रमेह रोग से पीड़ित हो सकती हैं। आपका स्वरूप

देखने में सामान्य तथा सुन्दर ही होगा। कभी कभी आपकी वाणी अत्यन्त ही कठोरता से पूर्ण रहेगी जिससे श्रोता अत्यन्त कष्टानुभूति करेगा। अतः आपने सम्भाषण में यत्नपूर्वक मधुर शाब्दो का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में पैदा होने के कारण आप अत्यन्त ही स्वतंत्रता प्रिय रहेंगी तथा स्वच्छन्दता आपके कार्यों को सम्पन्न करने की इच्छा रखेंगी। बाहरी हस्तक्षेप या कोई भी दबाव आपको पसन्द नहीं आएगा। समय समय पर धन धान्यादि को एकत्रित करने की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगी। अपने कार्य क्षेत्र में आप अत्यन्त सम्माननीय तथा आदरणीया मानी जाएगी क्यों कि आप पूर्ण प्रशिक्षित होंगी। आप एक गुण ग्राही महिला भी होंगी जो अच्छे गुणों या बातों को अन्य लोगों से ग्रहण करके उसे धारण करेंगी। लेकिन आप स्वयं अपने मुख से अपनी प्रशंसा स्वयं करेंगी अतः लोग आपसे प्रसन्न नही रहेंगे।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए शुभ रहेंगी।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य

मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा। धन धान्य का वे पूर्ण लाभार्जन करेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार से आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी वे पूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा आपको प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा किसी सैद्धान्तिक मतभेद पर इसमें कटुता या तनाव भी परिलक्षित होगा परन्तु कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं उन्हें सर्वदा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, मीन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ रहेगा। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा असफलता ही हाथ लगेगी। साथ ही गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय ठीक नहीं चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता तथा अन्य शुभ कार्य सिद्ध नहीं हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चाहिए एवं शुक्रवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत चन्दन, चावल, दूध इत्यादि पदार्थो को किसी सुयोग्य पात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

Prem Pagare
Swatik Future Point
Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh
Mo.No. 9826471293
Email:- prempagare19@gmail.com

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

Prem Pagare
Swatik Future Point
Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh
Mo.No. 9826471293
Email:- prempagare19@gmail.com